बदलाव

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : जानवरी 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Change)

ब-द-ल-ा-व

विषय-सूची

1. बदलाव- एक आवश्यक प्रक्रिया 1

2. हमारे इरादे और इच्छाओं में बदलाव 4

3. हमारे विचारों, व्यवहारों, बातों और आचरण में 6

4. अनअपेक्षित बदलावों हेतु खुले होना 8

5. बदलाव-उन्नति और वृद्धि हेतु आवश्यक 11

6. बदलाव का आत्मा 12

1

बदलाव - एक आवश्यक प्रक्रिया

बदलाव! हमारे चारों ओर सारी बातें लगातार बदल रहीं हैं। सारे संसार में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा अन्य बहुत-सी बातें बदलते हुए हम देखते हैं। हर समय चीजें एक सी नहीं रहती हैं। एक सामान्य कहावत है कि एक बात है जो आज लगातार संसार में हो रही है वह है बदलाव। "बदलाव" शब्द का अर्थ है कि कोई ऐसी घटना अथवा प्रक्रिया जिसके कारण चीजें बदल जाती हैं।

बदलाव एक मसीही के लिए भी महत्वपूर्ण है। हमारा मसीही जीवन पश्चात्ताप से आरम्भ हुआ था, जिसका अर्थ है कि पाप और शैतान की ओर से हमने अपना मन और हृदय हटाकर परमेश्वर की ओर लगाया है। तभी प्रभु ने तुरन्त हमारे अन्दर बदलाव कर दिया। हमारा नया जन्म हो गया। हम मसीह में नई सृष्टि बन गए। एक ही क्षण में परमेश्वर ने हमारी आत्माओं में एक सृजनात्मक कार्य किया कि हम अन्धकार से ज्योति में; शैतान के बन्धन से छूट कर मसीह में स्वतन्त्र हो गए। मसीही जीवन लगातार एक बदलाव का जीवन है। परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया है "हम उसके पुत्र के स्वरूप में बदलते जाएं" (रोमियों 8:29)। लगातार बदलाव के द्वारा ही हम मसीह की समानता में पूर्णत: बदलते जाते हैं। हम बदलाव के उस महान दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं- जब प्रभु स्वयं तुरही की आवाज के साथ स्वर्ग से उतरेगा और पलक की एक झपकी में हम सब बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:51,52)। नाशवान अविनाशी को पहन लेगा। "हम उसकी तरह बन जाएंगे क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3:2)।

मसीह के साथ हमारे जीवन का आरम्भ एक बदलाव के साथ हुआ और यह बदलाव अन्य घटनाओं के साथ भी चलता रहेगा। तौभी इन दोनों बिन्दुओं के बीच बदलाव एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। यह

पुस्तक उसी विषय पर चर्चा करती है और आवश्यक रूप से एक प्रेरणादायक है ताकि इस लगातार बदलाव की प्रक्रिया में हमें व्यस्त रखे। हम अपने जीवनों के उन क्षेत्रों पर भी चर्चा करेंगे जहाँ हमें बदलाव की आवश्यकता है।

"परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं" (2 कुरिन्थियों 3:18)।

यदि हमारा ध्यान प्रभु पर है, तब यह आवश्यक परिणाम है कि हम उसकी समानता में बदल जाएगें। बल्कि हम जितना अधिक उसके निकट आएगें और उसकी महिमा पर ध्यान देगें, उतना ही अधिक हम अपने जीवनों के उन क्षेत्रों को पहचानने लगेंगे जहाँ बदलाव की आवश्यकता है। उपर्युक्त पद हमें बताता है कि हम "बदलते जाते हैं" (ध्यान दीजिए कि यह वर्तमान लगातार चलनेवाला कार्य है)। जैसे-जैसे हम बदलते जाते हैं, वैसे वैसे हम महिमा में बदलते जाते हैं। अत: बदलाव एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक क्षेत्र से दूसरे में बदलते जाते हैं। इसी में आत्मिक उन्नति आती है। बिना बदलाव के कोई आत्मिक उन्नति नहीं आती है क्योंकि उन्नति अपने आप में ही एक बदलाव की प्रक्रिया है। हम विश्वास करते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि उसकी सन्तान आत्मिक रुप से पूरे जीवन भर एक ही स्थान पर बने रहें। बल्कि, वह चाहता है कि हम आगे बढ़ते जाएं। परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम एक ही स्थान पर रुके रहें।

बदलाव न केवल हमारे आत्मिक जीवन में ही आवश्यक होता है, परन्तु यह हमारे प्रतिदिन के जीवन में भी प्रकट होना चाहिए। हमें अपने व्यक्तित्व, व्यवहार, बुद्धि, निपुणता, क्षमताओं, आर्थिक योजनाओं, उद्देश्यों आदि में अपनाना चाहिए। हमारे जीवन में हमें "महिमा में आगे बढ़ने" का निश्चय करना चाहिए। आखिरकार, परमेश्वर हमारे इस पृथ्वी पर के सारे कामों में रुचि रखता है, जैसे- शिक्षा, भविष्य, परिवार, व्यवसाय

और सेवा आदि। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने और कार्य करने हेतु अवसर होता है।

उदाहरण के लिए, यदि आप एक सफल चिकित्सक हैं, तौभी आप परिश्रम कर सकते हैं कि आप और अच्छे चिकित्सक बनें। बल्कि आप ऐसे तरीकों पर विचार कर सकते हैं कि जो लोग इससे अथवा उपचार की सुविधाओं से वंचित हैं, उन्हें यह सुविधा प्रदान कर सकें। आप उन कामों को कर सकते हैं जो पहले आपकी योजना में नहीं थे। यदि आप एक विद्यार्थी हैं तो आप परिश्रम करके अपने ज्ञान और उपलब्धियों को बढ़ा सकते हैं। यदि आप घर पर रहते हैं तो अपने परिवार की देखभाल करने और उन्हें अधिक आराम प्रदान करने में गुणवत्ता ला सकते हैं। यदि आप सेवक हैं तो आप अपने अन्दर और उन्नति कर सकते हैं। तौभी ये सारी बातें तभी सम्भव होंगी जब हम अपने आप में बदलाव करने के लिए तैयार होते हैं। अगले अध्यायों में हम बदलाव के कुछ क्षेत्रों के बारे में विचार करेंगे।

यदि हमारा ध्यान प्रभु पर है, तब यह आवश्यक परिणाम है कि हम उसकी समानता में बदल जाएगें। बल्कि हम जितना अधिक उसके निकट आएगें और उसकी महिमा पर ध्यान देगें, उतना ही अधिक हम अपने जीवनों के उन क्षेत्रों को पहचानने लगेंगे जहाँ बदलाव की आवश्यकता है।

2

हमारे इरादों और इच्छाओं में बदलाव

"हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर" (भजनसंहिता 51:10)।

हमारे अन्दर के इरादे और इच्छाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें यह मानने की आवश्यकता है कि एक आत्मिक और सच्चे मसीही के इरादे या इच्छाएं एक विशेष क्षेत्र में गलत हो सकते हैं। हममें से कोई भी इस बुराई से स्वत: नहीं बच सकता है। बल्कि हमें लगातार इन बातों से चौकस रहना पड़ता है। प्रभु हमें सिखाता है, "अपने मन की सुरक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीतिवचन 4:23)। अपने मन को गलत इरादों में पड़ने से रोकने की जिम्मेदारी हमारी है। इसमें कोई गलती नहीं है कि हम अपने हृदयों को जाँचे और देखें कि कोई इस प्रकार के इरादे या इच्छाएं तो नहीं हैं। यह महत्वपूर्ण है और बदलाव के लिए प्रथम कदम है। परमेश्वर का वचन हमें बार-बार बताता है कि हम अपने जीवनों को जाँचें।

"इसलिये मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए" (1 कुरिन्थियों 11:28)।

"यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते" (1 कुरिन्थियों 11:31)।

"अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो" (2 कुरिन्थियों 13:5)।

सेवा में इरादे

गलत इरादों और इच्छाओं को पहचानने के बाद उनका अंगीकार करें और प्रभु से कहें कि वह हमें बदले। प्रार्थना करें, "हे प्रभु मुझ में एक

शुद्ध हृदय उत्पन्न कर और मेरी आत्मा को नया कर दे।" व्यक्तिगत रूप से हमें अपने जीवनों में हमें लगातार बुरे इरादों जो बहुत प्रकार के होते हैं, से अपनी चौकसी करना है जब हम लोगों की सेवा करते हैं। हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए, "मैं यह क्यों कर रहा हूँ? मेरा इरादा क्या है? मेरी ईमानदारी से क्या इच्छा है? उदाहरण के लिए यदि हमें किसी विशेष स्थान पर सेवा हेतु बुलाया गया है, तब हमें प्रभु से कहना चाहिए प्रभु हमारे हृदयों को तैयार करे और हमें वहाँ जाने का शुद्ध इरादा दे। हमें उस दान पर ध्यान देने से बचने के लिए अपने हृदयों की चौकसी करनी चाहिए जो वे हमारी सेवा के लिए दे सकते हैं। जब हम परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ का चलन अपनी सेवा में चाहते हैं, तब हमें इस बात से अपने हृदय की चौकसी करनी चाहिए कि कहीं हम अपनी पहचान "बहुत अभिषिक्त परमेश्वर के जन" के रुप में तो नहीं चाहते हैं। जब हम सेवा में आगे बढ़ना चाहते हैं तो हृदय की चौकसी करें कि कहीं हम अपनी "सेवा" अथवा "राज्य" को तो नहीं बढ़ा रहे हैं। हमें अपने आप को लगातार यह स्मरण दिलाना है कि यह "परमेश्वर का काम" है, "हमारा काम" नहीं है और यह "परमेश्वर का राज्य" है हमारा राज्य नहीं है।

मैंने सेवा में चौकस रहने पर बल दिया है क्योंकि हमारे जीवन में हमारे इरादे और इच्छाएं बहुत कुछ निश्चय और प्रभावित करती हैं। इससे भी बढ़कर परमेश्वर हमारे बाहरी रूप से कहीं अधिक देखता है। "क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (1 शमूएल 16:7)। परमेश्वर अन्दर से सच्चाई चाहता है (भजनसंहिता 51:6)। अपने इरादों और इच्छाओं की लगातार चौकसी करें। यदि वे ठीक नहीं है तो प्रभु के पास जांए और उससे कहें कि वह आपको ब-द-ले!!

अपने मन को गलत इरादों में पड़ने से रोकने की जिम्मेदारी हमारी है।

3

हमारे विचारों, व्यवहारों, बातों और आचरण में बदलाव

"इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2) ।

"और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ" (इफिसियों 4:23)।

"कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन और प्रेम, और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा" (1 तीमुथियुस 4:12)।

परमेश्वर हमारे विचारों और व्यवहारों में बदलाव देखना चाहता है। मन का नया होना' (रोमियों 12:2) इस बात को प्रकट करता है कि हमारे दृष्टिकोण, व्यवहार और सोचने के तरीके में बदलाव होना चाहिए। इसकी कई दिशाऐं हैं। हमें संसार के विचारों और व्यवहारों को बदलकर परमेश्वर के विचारों और व्यवहारों को पहनना है। हमें नीचा न सोचकर परमेश्वर के वचन और विश्वास के स्तर से सोचना है। हममें से कुछ को नकारात्मक निराशावादी सोच "यह नहीं हो सकता" से छुटकारा पाकर इस स्तर तक आना चाहिए कि हम प्रत्येक बड़ी सम्भावना रखें कि परमेश्वर में साधारण विश्वास के द्वारा सब कुछ सम्भव है। हम में से कुछ "पुराने तरीकों" को अपनाने में इतने लीन हैं कि वे "नए तरीकों" को अपनाना नहीं चाहते जिन्हें स्वयं प्रभु करना चाहते हैं। हम अपने धार्मिक रीति-रिवाजों में इतने बन्ध गए हैं कि हमारी सोच ऐसी हो गई है कि परमेश्वर कोई और तरीके से काम नहीं कर सकता सिवाए उसके जो हमें अब तक सिखाया गया है।

कुछ अन्य लोगों के पास बहुत छोटे स्वप्न हैं, बहुत निम्न प्रेरणा है: दर्शन धुँधले हैं और उन्हें इन क्षेत्रों में बदलाव की आवश्यकता है। हमें बड़े स्वप्नों को देखना है! परमेश्वर के लिए अधिक काम करने की प्रेरणा और ऐसे दर्शनों को देखने की आवश्यकता है जो सम्पूर्ण संसार को प्रभावित कर सकें। हममें से कुछ अपनी असफलताओं के अनुभवों, पराजय, निराशाओं अथवा विनाश के कारण, निराश अथवा हताश हो चुके हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अब प्रेरणा, उन्नति और वृद्धि के लिए कोई इच्छा ही नहीं बची है। परमेश्वर इन सबको बदल सकता है यदि हम थोड़ा सा भी उसके साथ सहयोग करने को तैयार हों। कुछ तो बस यूँ ही आलसी होते हैं, सभी कामों में ढुलमुल रवैया, बहुत ढीले-ढाले। हमें अपने व्यवहार में बड़े बदलाव की आवश्यकता है!! कुछ हैं जिन्हें बदलने की आवश्यकता है। कुछ लोग केवल योजनाएं बनाते और बातें करते रहते हैं लेकिन "हल पर हाथ" कभी नहीं रखते। ऐसों को भी बदलाव की आवश्यकता है। कुछ डर, घमण्ड, कड़वाहट अथवा चारित्रिक समस्याओं में ग्रस्त हैं जो परमेश्वर को पसन्द नहीं हैं और वह इनमें बदलाव देखना चाहता है। परमेश्वर हमें हमारी बातों और व्यवहार में उच्च स्तर पर ले जाना चाहता है। हमारी बातचीत और व्यवहार एक विश्वासी के अनुसार होने चाहिए।

अपने व्यक्तिगत जीवनों में जब हमें अपने ऐसे व्यवहारों और विचारों के विषय में पता चले जो ठीक नहीं हैं तब हमें परमेश्वर के पास जाकर उसके सम्मुख अंगीकार करके प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें बदले। प्रभु के साथ कई वर्षों तक चलने के बाद भी हमें अपने जीवनों में ऐसे बहुत से क्षेत्र मिलेंगे जहाँ बदलाव की आवश्यकता है। क्या आप अपने जीवन में ऐसे आचरणों और विचारों को पहचानते हैं जिन्हें आप परमेश्वर के सम्मुख लाकर कहेंगे, "प्रभु मैं अपने जीवन में ये सब बदलाव चाहता हूँ?"

हमें संसार के विचारों और व्यवहारों को बदलकर परमेश्वर के विचारों और व्यवहारों को पहनना है।

4

अनअपेक्षित बदलाव हेतु खुले होना

"हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है" (यूहन्ना 3:8)।

आत्मा से जन्म लेने के द्वारा हमें ऐसा जीवन मिलता है जिसके बारे में सब कुछ पूर्ण रूप से व्याख्यान नहीं किया जा सकता है। कुछ बातों के प्रति हमें अधीन होना और केवल अनुभव करना होता है। प्रभु यीशु ने नए जन्म के अनुभव की समानता हवा के बहने से की है जो जिध र चाहती है उधर बहती है। हम केवल इसका अनुभव करते हैं। हम इसकी उत्पत्ति और अन्तिम मंजिल नहीं जानते हैं। इसी प्रकार से आत्मा के कामों को पूरी रीति से बखान नहीं किया जा सकता है। हम केवल अनुभव करते हैं और जान लेते हैं कि उसने कुछ किया है। परमेश्वर कई बार हमारे जीवनों में विभिन्न घटनाऐं और परिस्थितियों को आने देता है जो हमारे लिए बिल्कुल अनअपेक्षित होती हैं। हमें उनका पहले से ज्ञान नहीं होता कि हमें उनका सामना करना पड़ेगा। वे हमारी योजना के भाग नहीं थे। फिर भी बुद्धिमानी इसी में है कि हम प्रभु की अधीनता में आएं और "जहाँ हवा ले जाए वहाँ जाएं।" अनअपेक्षित बदलावों के प्रति खुले रहना सीखना बहुत आवश्यक है जिन्हें प्रभु हमारे जीवनों में लाता है। ये हमारे जीवनों में नए मोड़ ला सकते हैं।

हमारी सेवा में बदलाव

हम दोनों एमी (मेरी पत्नी) और मैं ऐसी बहुत सी घटनाओं को याद करते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने अनअपेक्षित बदलावों को प्रयोग करके हमें अपनी आशीषों का भागीदार बनाया। 1995 में मेरे पिताजी अपनी व्यापारिक यात्रा पर अमेरिका आए। उन्होंने निश्चय किया कि वह मेरे पास एक रात के लिए आकर और ब्रन्सविक नामक स्थान जो न्यू

जर्सी में है, रुकेंगे जहाँ मैं रहता था। वह शनिवार को आए थे और रविवार शाम को उन्हें वापस जाना था। मेरे पिताजी सदैव यह चाहते थे कि वे अफ्रीकन-अमेरिकन चर्च में भाग लेंगे और उनका गाना व आराधना का तरीका देखेंगे। पास में ही एक अफ्रीकन-अमेरिकन चर्च था और हम रविवार को वहाँ गए। उससे पहले मैंने इतनी चमकीली और लगातार व तेज आराधना कभी नहीं देखी थी। यह बहुत तेज थी मानो कि सबको बहरा कर देगी और लगता था कि उनकी आवाज से इमारत ही गिर जाएगी। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। उस समय तक मेरी संगति कोरियन-अमेरिकन भाई और बहनों के साथ थी जो विश्वविद्यालय में थे। हम आराधना में स्वतन्त्र थे फिर भी उस अनुभव की तरह नहीं था। तब हजारों विचार मेरे मन में आए। मैं अपने मन की गहराई में यह जानता था कि उस प्रकार की आराधना ठीक थी। मैं आराधना स्वतन्त्र रहना चाहता था। परन्तु अफ्रीकन-अमेरिकन चर्च की तुलना में मैं ईंट की दीवार की तरह कठोर था। बाद में उसी दिन जब में अकेला था, मैं बहुत असमन्जस में पड़ गया। एक तरफ तो यह विचार आ रहा था कि हे प्रभु वहाँ पुनः नहीं जाना चाहता। मैं उनकी तरह कभी नहीं बन पाऊँगा। और मैं उनकी आवाज की तीव्रता को भी सहन नहीं कर पाऊँगा। दूसरा विचार यह आ रहा था, "हे प्रभु मैं वह चाहता हूँ जो उनके पास है- आपकी आराधना करने की स्वतन्त्रता। इसे संक्षेप में कहते हुए, मैं पुनः वहाँ गया और जब एमी मेरे साथ जुड़ी तो हम एक साथ वहाँ गए। थोड़े ही समय में मुझे सेवा करने का मौका मिला और तब से हम प्रति बुद्धवार शाम को उसी चर्च में सेवा करते रहे। हम वहाँ अफ्रीकन-अमेरिकन भाई-बहनों से मिले। हम मैनुएल और तानिया जोड़े से भी मिले जो स्पैनिश भाषा बोलते थे और वहाँ आते थे। बाद मैं हमें हिस्पैनिक चर्च में सेवा करने के लिए बुलाया गया जिसे वे आरम्भ कर रहे थे। शीघ्र ही हम हिस्पैनिक चर्च के जीवन में और अधिक बाँटने लगे। मैनुएल और तानिया साप्ताहिक रूप से वचन का अध्ययन करने हेतु हमारे साथ समय बिताते थे। एमी इसी चर्च में संगीत में मदद करने लगी और उनकी सहायता से नवम्बर 1996 में हमारे लिए इक्वाडोर में सेवा करने का मार्ग खुल गया। देखिए, मेरे पिताजी की न्यू ब्रन्सविक में एक रात के भ्रमण से किस

प्रकार एक के बाद कड़ियाँ जुड़तीं गई। यह सब कुछ अनअपेक्षित था? निश्चय ही!! हमने केवल इतना सीखा था कि जहाँ हवा ले जाए हम वहाँ जाएंगे। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हम अफ्रीकन-अमेरिकन चर्च अथवा हिस्पैनिक समुदाय की सेवा करेंगे। जहाँ कहीं वह ले जाना चाहता है- हम वहाँ जाएंगे!! तैयार हो जाएं और उन अनअपेक्षित बदलावों के लिए खुले रहें जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में लाना चाहता है।

- बुद्धिमानी इसी में है कि हम प्रभु की अधीनता में आएं और "जहाँ हवा ले जाए वहाँ जाएं।"
- परमेश्वर कई बार हमारे जीवनों में विभिन्न घटनाओं और परिस्थितियों को आने देता है जो हमारे लिए बिल्कुल अनअपेक्षित होती हैं।
- उन अनअपेक्षित बदलावों के लिए खुल रहें जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में लाना चाहता है।

5

बदलाव - उन्नति और वृद्धि हेतु आवश्यक

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

हम एक महिमा से दूरी महिमा में बदलते जाते हैं। अत: उस महिमा से जो आज हम अनुभव करते हैं, अगली महिमा में बढ़ने के लिए पहले हमें बदलने की आवश्यकता है। वे बातें जो हमें उन्नति करने से रोकती हैं चाहे वे हमारे इरादे, व्यवहार, आचरण अथवा बातचीत ही क्यों न हो, उन्हें बदलने की आवश्यकता है। हमें उठकर खड़ा होना है और अंगीकार करना है कि वे क्या बातें हैं, और परमेश्वर की सहायता से उन्हें बदलें। हम विचार कर सकते हैं कि उस "अकेले गेहूँ के दाने" की तरह आप और हम कहाँ हैं। यदि हम उस स्थान से जहाँ आज हैं आगे उस स्थान तक बढ़ना चाहते हैं जहाँ "अधिक फल" ला सकें, तो हमें सबसे पहले "जमीन में पड़ना है", "मरना है" और तब "अधिक फल फलना है।" यह हमारे जीवन में बदलाव को प्रदर्शित करता है। सबसे पहले हमें भूमि पर पड़ना है और इसमें नम्रता की आवश्यकता होगी। इसमें नम्रता की आवश्यकता है कि आप इस सत्य को स्वीकार करें कि आपको बदलने की आवश्यकता है। हमें अपने आप को मार डालना है। कभी-कभी यह दर्दनाक प्रक्रिया भी हो सकती है। तब हम महिमा के अलग चरण में जाएंगे, इस प्रकार हम उन्नति और वृद्धि का अनुभव करेंगे।

वे बातें जो हमें उन्नति करने से रोकती हैं चाहे वे हमारे इरादे, व्यवहार, आचरण अथवा बातचीत ही क्यों न हो, उन्हें बदलने की आवश्यकता है।

6

बदलाव का आत्मा

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। तब परमेश्वर ने कहा,"उजियाला हो," तो उजियाला हो गया" (उत्पत्ति 1:1-3)।

परमेश्वर का आत्मा हमें एक महिमा से दूसरी महिमा में बदलता है। पवित्र आत्मा बदलाव का आत्मा है। पृथ्वी बेडौल, खाली और अन्ध कार से भरी थी। फिर भी परमेश्वर का आत्मा पानी पर मण्डरा रहा था। परमेश्वर ने वचन बोला, "उजियाला हो" और परमेश्वर का सामर्थी आत्मा अन्धकार के बीच में उजियाला ले आया। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि परमेश्वर का आत्मा उस समय इस बेडौल, अंधेरी और खाली पृथ्वी पर मण्डरा रहा था जब परमेश्वर उन सृजनात्मक और पुन: स्थापित करने वाले वचनों को बोलने को तैयार था। हमें निश्चय है कि पवित्रात्मा बदलाव करनेवाला आत्मा है। वही बदलाव और परिवर्तन करता है। उसने यह कार्य उस समय बहुत बड़े पैमाने पर किया जब पृथ्वी पर सृजनात्मक कार्य हुआ (उत्पत्ति 1)। तब हम कितना अधिक उससे आशा कर सकते हैं कि वह हमारे जीवन में काम करके परमेश्वर की महिमा हममें डाल कर हमें बदल दे ताकि हम भी उसकी दृष्टि में अच्छे बन जाए। वह हमारे जीवन में उसी बिन्दु तक काम करता है जहाँ तक हम उसकी अधीनता में रहते हैं। पवित्रात्मा के लिए अपने हृदय को खोलें अपने आप को उसके समक्ष रखें और उससे कहें कि वह आपको बदले। उससे कहें कि वह आपके जीवन के उन क्षेत्रों में आपकी सहायता करे जहाँ आपको बदलाव की आवश्यकता है।

परमेश्वर का वचन बदलाव करता है

परमेश्वर के सृजनात्मक और पुनः स्थापित के काम में न केवल पवित्रात्मा पृथ्वी पर मण्डराता था बल्कि परमेश्वर का वचन भी सुनसान और अन्धकार भरी पृथ्वी पर बोला गया। इसी प्रकार आत्मा और वचन हमारे जीवनों में बदलाव लाते हैं। अपना हृदय और मस्तिष्क परमेश्वर के वचन के समक्ष खोल दें। आप स्वयं इसे पढ़ें और इस पर मनन करें और परमेश्वर का वचन आपके जीवन में बदलाव करने की सामर्थ डालना आरम्भ करेगा।

> पवित्रात्मा के लिए अपने हृदय को खोलें अपने आप को उसके समक्ष रखें और उससे कहें कि वह आपको बदले। उससे कहें कि वह आपके जीवन के उन क्षेत्रों में आपकी सहायता करे जहाँ आपको बदलाव की आवश्यकता है।

एक प्रार्थना

प्रभु, मुझे बदल दे!

प्रिय पिता, मैं आपके सम्मुख यीशु के नाम में आता हूँ। प्रभु मेरे जीवन में ऐसी बातें हैं जिन्हें मैं जानता हूँ कि उन्हें बदलने की आवश्कयता है। प्रभु अपने वचन और आत्मा की सामर्थ से मुझे बदल दे। मैं इस स्तर से उठकर उस स्तर तक जाना चाहता हूँ जहाँ आप मुझे ले जाना चाहते हैं। मैं वही बनना चाहता हूँ जो आप मुझे बनाना चाहते हैं। मैं वह सब कुछ प्राप्त करना चाहता हूँ जो आपने मेरे लिए रखा है। प्रभु मेरा हृदय और मन बदल दे। मेरे इरादे, मेरे व्यवहार, मेरी बातचीत और मेरा आचरण बदल दे। प्रभु मेरी सहायता कीजिए ताकि मैं उन बातों से छुटकारा पा सकूँ जो मुझे परमेश्वर की बातों में उन्नति करने और बढ़ने से रोकती हैं। आमीन!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ। प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

हमारा मसीही जीवन पश्चात्ताप से आरम्भ हुआ था, जिसका अर्थ है कि पाप और शैतान की ओर से हमने अपना मन और हृदय हटाकर परमेश्वर की ओर लगाया है। तभी प्रभु ने तुरन्त हमारे अन्दर बदलाव कर दिया। हमारा नया जन्म हो गया। हम मसीह में नई सृष्टि बन गए। एक ही क्षण में परमेश्वर ने हमारी आत्माओं में एक सृजनात्मक कार्य किया कि हम अन्धकार से ज्योति में; शैतान के बन्धन से छूट कर मसीह में स्वतन्त्र हो गए।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org